भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा : एक समीक्षा

Name – Tonde Mahadev Uttam
Supervisor Name - Dr.Patil Nimba Zopa
Department of Defence and Strategic Studies
Institute Name- Malwanchal University, Indore

संक्षेप

भारत एक महत्वपूर्ण भूमि और राजनैतिक खेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है , और यहां के पड़ोसी देश उसके राजनैतिक, आर्थिक और सुरक्षा संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए , भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।पाकिस्तान , चीन, नेपाल, बांग्लादेश, जैसे पड़ोसी देश भारत के साथ संबंध रखते हैं। ये संबंध सौजन्यपूर्ण होते हैं लेकिन साथ ही साथ चुनौतियों से भरपूर होते हैं। पाकिस्तान के साथ विवाद, चीन के साथ अक्साई चिन क्षेत्र में सीमा विवाद और बांग्लादेश के साथ आपसी मुद्दों का उल्लिखन किया गया है।इन संबंधों की सुरक्षा परिपेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा संबंध उनके राजनैतिक और सुरक्षा पॉलिसियों को प्रभावित कर सकते हैं। भारत को इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सकारात्मक दिशा में कदम उठाना होगा और समर्थन और समर्पण के साथ पड़ोसी देशों के साथ संबंध बनाए रखना होगा।संक्षेप में कहें तो , भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा महत्वपूर्ण हैं और इन्हें सावधानीपूर्वक देखा जाना चाहिए ताकि भारतीय सुरक्षा और राजनैतिक स्थिरता को बनाए रखने में सहायक हो सकें।

परिचय

भारत एक महत्वपूर्ण देश है जिसके साथ कई पूर्वी और पश्चिमी देशों के साथ सख्त और महत्वपूर्ण संबंध हैं। इन संबंधों का मुख्य उद्देश्य साहित्यिक , वाणिज्यिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विनिमय को बढ़ावा देना है। यह सम्बन्ध भारत के पड़ोसी देशों से होते हैं , जो भूमध्यसागर के पास हैं , और भी सफलता और साझा लाभ प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।भारत के सबसे बड़े पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन हैं। इन दोनों देशों के साथ भारत के संबंध राजनीतिक और सुरक्षा क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करते हैं, लेकिन साथ ही उनके साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक विनिमय भी होता है।साथ ही , भारत के पड़ोसी देश नेपाल , भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, और म्यांमार भी हैं। इन देशों के साथ भारत के संबंध

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। भारत और नेपाल के बीच मित्रता संधि के तहत गहिरा संबंध है और भूटान के साथ भी एक खास संबंध है, जिसे "ध्रुवीय भारत" कहा जाता है।

बांग्लादेश, श्रीलंका, और म्यांमार के साथ भारत के संबंध व्यापारिक और सांस्कृतिक मामलों में मजबूत हैं। इन देशों के साथ भारत विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करता है , जैसे कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, और कला-संस्कृति के क्षेत्र में।भारत के पूर्वी और पश्चिमी पड़ोसी देशों के साथ संबंध एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और ये संबंध दोनों देशों के लिए लाभकारी हैं, चाहे वो व्यापारिक या राजनीतिक हों। इन संबंधों के माध्यम से भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ गहरा संबंध बनाता है और साथ ही एक साझा और स्थिर आधार तैयार करता है जो पीढ़ियों तक बना रहता है।

पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में दूरी के कारण

"पड़ोसी देशों के साथ संबंध" भारत के विदेशी नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इन संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका है जो देश के विकास और सुरक्षा में खेलती है। पड़ोसी देशों के साथ रिश्तों की दूरी का अद्यतन करने के संदर्भ में, इसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों से समझना आवश्यक है।

पहले तो, दूरी के कारण भारत और उसके पड़ोसी देश एक-दूसरे के साथ सामाजिक , सांस्कृतिक, और व्यापारिक विनिमय में कम शामिल हो सकते हैं। यह दूरी भाषा , सीमा, और अधिक समय और संसाधनों की आवश्यकता को बढ़ाती है और संबंधों को दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, समर्थन, सुझाव, और समय समय पर बातचीत अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ताकि इस दूरी को कम किया जा सके और सहयोग के अवसरों को पकड़ा जा सके।

दूसरे तथ्य यह है कि दूरी के कारण सीमा सुरक्षा पर अधिक दबाव पड़ सकता है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद होते रहे हैं , और इसका मानव और सामरिक मूल्य सबसे ज्यादा हो सकता है। इसलिए, इस दूरी को कम करने के लिए दोनों देशों के बीच सुरक्षा मुद्दों को संवाद के माध्यम से हल करने का प्रयास करना चाहिए।

अगला महत्वपूर्ण पहलु है व्यापारिक संबंधों का प्रबंधन। दूरी के कारण व्यापारिक विनिमय में कठिनाइयां आ सकती हैं, लेकिन यह भी एक संभावित अवसर है। भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच व्यापार संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सरल प्रक्रियाएँ और कस्टम निर्देशों को सुधारने का प्रयास करने चाहिए।

समर्थन, दूरी के कारण भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का प्रबंधन महत्वपूर्ण है और इसे सजगता , समर्थन, और सहयोग के माध्यम से कम किया जा सकता है। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि दोनों देश खुले मन से साथ काम करें और अपने सामर्थ्यों का सहयोग करें ताकि इस दूरी को पार किया जा सके और संबंधों को मजबूत बनाया जा सके।

अध्ययन का महत्व

भारत के पड़ोसी देशों से संबंध और भारत की सुरक्षा के विश्लेषणात्मक अध्ययन का महत्व अत्यधिक है , क्योंकि यह भारतीय सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले कई प्रमुख मामलों के साथ जुड़ा होता है।पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का अध्ययन भारत को उनके साथ होने वाले राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संकटों को समझने में मदद करता है। पाकिस्तान के साथ कश्मीर के विवाद, चीन के साथ सीमा पर विवाद, और अन्य मुद्दे भारत की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय और सामरिक संबंध भी बढ़ते हैं , जिससे भारत की सुरक्षा क्षमता में सुधार हो सकता है। नेपाल , भूटान, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ आर्थिक सहयोग और विकासी योजनाएँ भी सुरक्षा को समृद्ध करती हैं।अध्ययन का महत्व यह है कि यह भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा , सहयोग, और सुदृढ़ संबंध बनाने और दिप्लोमेसी के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने में मदद करता है , ताकि भारत सुरक्षित और स्थिर रूप से अपने क्षेत्र में रह सके।

साहित्य की समीक्षा

सुबेदी, एस. पी. (1994). भारत-नेपाल सुरक्षा संबंध और 1950 की संधि तो दोनों के कूटनीतिक संबंधों का एक लम्बे समय से ही मूल आधार रही है , लेकिन इस समय नए दृष्टिकोण के लिए उपयुक्त समय आ सकता है। 1950 की शांति और मित्रता की संधि , जो प्रारंभ में सहयोग और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी , कई बार तनाव का स्रोत बन गई है। हाल के सीमा विवाद और संधि के व्याख्यान पर मतभेद इस दोबारा इस द्विपक्षीय इस्मान में नई दिशा की आवश्यकता को हाइलाइट करते हैं।दोनों देश गहरे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध रखते हैं , इसलिए दोस्ताना संबंध बनाए रखना महत्वपूर्ण है। हालांकि , संधि की पुनर्मूल्यांकन सुरक्षा चुनौतियों , आर्थिक सहयोग, और संबंधानुबंध की अधिक न्यायसंगत तरीके से निर्धारण करने का एक अवसर प्रदान कर सकता है। इसमें कुछ विशिष्ट प्रावधानों की पुनर्विचार करने या संधि को एक और समकालीन समझौते से बदलने का सही समय हो

सकता है, जो हर देश की स्वायत्तता और सुरक्षा हितों का सम्मान करते हुए सहयोग और मित्रता की भावना को बढ़ावा देता है।इसके बजाय, भारत और नेपाल बदलते भूगोलिक परिप्रेक्ष्य में अनुकूल हो सकते हैं और भविष्य के लिए अपने साझा साथी को मजबूत कर सकते हैं।

मिश्रा, आर. (2019). "CSCAP क्षेत्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण पर भारतीय परिप्रेक्ष्य" काउंसिल फॉर सिक्योरिटी कोआप में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा विषय पर भारतीय दृष्टिकोण का अध्ययन करता है। एशिया-प्रशांत क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में , भारत का दृष्टिकोण क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य को निर्मित करने में महत्वपूर्ण है। यह लेख भारत के विकसित हो रहे रणनीतिक हितों की जरुरत को महत्व देता है, जिसमें क्षेत्र में शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को जोर दिया गया है। काउंसिल फॉर सिक्योरिटी कोआप के कंटेक्स्ट में भारतीय दृष्टिकोण ने सीमांत विवाद , समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद, और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों जैसे विविध सुरक्षा परिस्थितियों का ध्यान रखा है। यह भी जांचता है कि भारत ने क्षेत्रीय सहयोग में सुधार के लिए अपने प्रयासों को कैसे बढ़ावा दिया है , जैसे क्वाड और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन में अपनी भूमिका। लेख ने भारत के समर्थन को बल दिया है जो नियमों पर आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए और यहां तक की उम्मीद को बढ़ावा देने के लिए है , जो व्यापक, समग्र, और दीर्घकालिक क्षेत्रीय सुरक्षा समाधानों को प्रोत्साहित करने का आकांक्षा रखता है। काउंसिल सिक्योरिटी कोआप के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण को समझना , एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सहकारी रणनीतियों को रूपांतरित करने और शांति और विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह विश्लेषण भारत की प्राथमिकताओं और क्षेत्रीय सुरक्षा के मामले में एक सक्रिय और जिम्मेदार अभिनेता के रूप में भारत की दृष्टिकोण में मूल्यवान दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

अमादोर III, जे. एस., बोबिलो, ए., &पेनालबर, ए. (2011). "आसियान–भारत संबंधों में मुद्दे और चुनौतियाँ: राजनीतिक-सुरक्षा पहलु" शीर्षक लेख आसियान-भारत संबंधों के भीतर राजनीतिक और सुरक्षा पहलु की जटिल गतिविधियों की खोज करता है। जैसे-की आसियान (दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के संघ) दक्षिण-पूर्व एशिया के बदलते भूगोलिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, वही समय भारत के संबंध इस क्षेत्र के साथ बढ़ गए हैं।लेख इस बहुपहलु संबंध के नीचे छिपी चुनौतियों और अवसरों को प्रकाश डालता है , जैसे कि सीमांत विवादों, समुद्री सुरक्षा, और क्षेत्रीय स्थिरता के मामले से संबंधित चिंताएं। यह भी जाँचता है कि भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति की विशेषताएँ और आसियान की नियमों पर आधारित क्षेत्रीय आदेश की आशाओं के साथ मेल खाती हैं।एक गहरे विश्लेषण के माध्यम से , लेख आसियान-भारत संबंधों के

राजनीतिक-सुरक्षा पहलु के महत्व को बल देता है , साझा सुरक्षा चिंताओं का सामना करने , विश्वास बनाने और डिप्लोमैटिक और सैन्य संबंधों को बढ़ावा देने में। आसियान-भारत संबंधों के राजनीतिक-सुरक्षा पहलु को खोदने के माध्यम से , यह लेख उन विद्वानों , नीति निर्माताओं, और हितधारकों के लिए मूल्यवान दर्शन प्रदान करता है जो दक्षिण-पूर्व एशियाई भूगोल और भारत की भूमिका के सदैव बदलते गतिविधियों में रुचि रखते हैं।

दत्त, वि. पी. (2009). भारत की विदेश नीति एक जटिल और तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में नेविगेट कर रही है। जीयोपोलिटिकल परिवर्तन और विकसित गठबंधनों के इस युग में , भारत अपनी राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और वैश्विक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अपनी कूटनीतिक रणनीतियों को पुनर्निर्धारित कर रहा है। इस बदलते दुनिया में भारत की विदेश नीति के प्रमुख तत्व में संयुक्त राष्ट्र, रूस, और चीन जैसे प्रमुख शक्तियों के साथ मजबूत संबंधों को बढ़ावा देना शामिल है , साथ ही अपने पड़ोसी देशों के साथ अपनी गहनता को भी बढ़ावा देना। भारत अपने रिश्तों को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है ताकि यह अपने आर्थिक विकास, सुरक्षा, और क्षेत्रीय प्रभाव को सुनिश्चित कर सके। इसके अलावा, भारत क्षैत्रिक मंचों और बहुपक्षीय संगठनों जैसे ब्रिक्स , जी20, और शंकराचार्य संगठन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है ताकि वह वैश्विक शासन संरचनाओं को आकार दे सके और जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद जैसी सामान्य चुनौतियों का समाधान कर सके। इसके अतिरिक्त, भारत अपने संबंधों को विविधता देने के लिए अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया, और मध्य पूर्व के देशों के साथ संपर्क को बढ़ावा दे रहा है। भारत की विदेश नीति को एक व्यावहारिक दृष्टिकोण से चरित्रित किया जाता है जो वैश्विक मंच पर शांति , स्थिरता, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की में में दृढ इच्छाओं को प्रमोट करने का प्रयास करता है , जो 21वीं सदी में एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभरने की इच्छा का अभिव्यक्ति करता है।

शुक्ला, डी. (2006). भारत-नेपाल संबंधों का एक जटिल इतिहास है जिसमें साझा सांस्कृतिक जड़ें , भूगोलिक सट्टा, और कूटनीतिक चुनौतियों का सिगिया हुआ है। जबकि दोनों राष्ट्रों के बीच मजबूत सहयोग की संभावना है, वे महत्वपूर्ण मुद्दों का सामना भी करते हैं। ऐतिहासिक तनाव, सीमा विवाद, और नेपाल का भारत के अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप की धारणा रिश्तों को तनावपूर्ण बना दिया है। 2015-2016 की बंदूक , नेपाल के नए संविधान पर असहमति के कारण हुई , ने इन चुनौतियों को और बढ़ा दिया। हालांकि, दोनों देशों ने कूटनीतिक बातचीत के माध्यम से संबंधों को ठीक करने के प्रयास किए हैं।इन समस्याओं के बावजूद , सकारात्मक संबंधों के लिए संभावनाएं हैं। आर्थिक सहयोग , कनेक्टिविटी, और

सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहयोग के लिए उम्मीदवार रास्तों का बना रहता है। व्यापार, पारितंत्रिकता, और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने वाले परियोजनाओं से दोनों देश लाभान्वित हो सकते हैं। इसके अलावा, लोग-से-लोग के संबंध और साझा मूल्य बेहतर संबंधों के लिए मजबूत आधार प्रदान करते हैं। अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त करने के लिए, भारत और नेपाल को आपसी समझौते, विश्वास बनाने, और एक-दूसरे की स्वायत्तता का सम्मान करते हुए शेष मुद्दों का समाधान करना होगा। इन दो पड़ोसी देशों के बीच मेलमिलापी साझेदारी, क्षेत्रीय स्थिरता, और समृद्धि के लिए योगदान कर सकती है।

खेतरान, एम. एस. (2017). भूटान और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के आंतरिक मामलों में भारतीय हस्तक्षेप के आरोप दक्षिण एशियाई भूगोलविज्ञान में एक बार-बार उभरता मुद्दा रहा है। ये आरोप अक्सर उनकी घरेलू राजनीति, विदेश नीतियों, और विकास पर भारतीय प्रभाव के चिंता के चारों ओर घूमते हैं। भूटान के मामले में, भारत का भौगोलिक आदान-प्रदान और सुरक्षा संबंधों के कारण ऐतिहासिक रूप से गहरा संबंध रहा है। जबकि भूटान अपनी स्वायत्तता को बनाए रखता है, भारत भूटान की विदेश नीति और रक्षा मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है, अक्सर अंतरराष्ट्रीय मंचों में सीधे भूटानी प्रतिनिधित्व के बिना। इसी तरह, नेपाल में भारत का प्रभाव एक विवादात्मक मुद्दा रहा है, जिसमें नेपाली नेताओं ने कभी-कभी भारत को अपनी राजनीतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है। 2015-2016 की बंदूक ने इन चिंताओं को बढ़ा दिया, जिससे संबंध में तनाव पैदा हुआ। भारत के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने हितों को पड़ोसी देशों की स्वायत्तता और आकांक्षाओं का सम्मान करते हुए संतुलित करें। सकारात्मक बहस, आपसी बातचीत, और पारदर्शी सहयोग संबंधों में चिंताओं को कम करने में मदद कर सकते हैं और क्षेत्र में और समझदार संबंधों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

कुमार, एस. (संपादक). (2016). भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा एक प्रमुख चिंता है, जिसे इसकी भूगोलविज्ञानिक जटिलता और क्षेत्रीय चुनौतियों के मद्देनजर रखा जाता है। एक विविध जनसंख्या और व्यापक सीमाएँ वाले साथ, भारत को आतंकवाद, सीमा विवाद, और साइबर हमलों जैसी विभिन्न खतरों का सामना करना पड़ता है। देश अपनी सुरक्षा को सुरक्षित रखने के लिए एक बहुपहलु दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें एक मजबूत सैन्य, खुफिया एजेंसियाँ, और कूटनीतिक पहल का सहारा लिया जाता है। भारत की परमाणु क्षमताएँ संभावित प्रतिशत्रुओं के खिलाफ भयमोचक के रूप में कार्य करती हैं, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, यह अपने सैन्य और आतंकवाद विरोधी प्रयासों को मजबूत करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, रूस, और पड़ोसी देशों जैसे रणनीतिक साथियों के साथ मजबूत रिश्तों को बनाए रखता है। चीन और पाकिस्तान

के साथ सीमा विवाद गंभीर मुद्दे रहते हैं, जिसके लिए लगातार सतर्क रहने की आवश्यकता है। आतंकवाद विरोधी के रूप में शीर्ष प्राथमिकता बनी हुई है , जिसमें विद्रोहिता और उग्रवादी समूहों के खिलाफ लड़ने के लिए जारी प्रयास हैं। साइबर सुरक्षा मापाओं को संरक्षित करने के लिए भी कदम उठाए गए हैं। भारत आर्थिक और भौगोलिक रूप से आगे बढ़ते जाते हैं , इसलिए अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को क्षेत्र में स्थिरता और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

समस्या का विवरण

भारत के पड़ोसी देशों से संबंध और भारत की सुरक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते समय , कई महत्वपूर्ण समस्याएं सामने आती हैं जो भारत को उठानी होती हैं।

1. कश्मीर विवाद (पाकिस्तान) : पाकिस्तान के साथ कश्मीर पर विवाद है , जिसके चलते सीमा पर आतंकवाद और तनाव का सिलसिला जारी रहता है. इससे भारत की सुरक्षा खतरे में आ सकती है.
2. सीमा विवाद (चीन): भारत और चीन के बीच अक्साई चिन और आरूणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों पर सीमा पर विवाद है, जिससे सीमा सुरक्षा में चुनौतियां आ सकती हैं.
3. आतंकवाद (भारत-पाकिस्तान) : भारत के साथ पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवाद , जैसे कि लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद, सुरक्षा संदर्भ में महत्वपूर्ण समस्या है.
4. आर्थिक और रक्षा सहयोग (साथी देश) : भारत के साथ अपने पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और रक्षा सहयोग में समस्याएँ हो सकती हैं , जैसे कि बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थियों के संकट और चीन के साथ रक्षा व्यापार में मुद्दे.
5. सीमाओं की खिचाक (नेपाल, भूटान): नेपाल और भूटान के साथ सीमाओं की खिचाक और विवाद आ सकते हैं, जिनसे सीमा सुरक्षा को चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं.

इन समस्याओं का समाधान और भारत की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सुदृढ़ और सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है। दिप्लोमेसी , विशेष आर्थिक सहयोग , और सीमा सुरक्षा के मामले में सामरिक सहयोग इसके महत्वपूर्ण उपाय हो सकते हैं ताकि सुरक्षा संदर्भ में स्थिरता बनी रहे और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुरक्षित रखा जा सके।

निष्कर्ष

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा एक महत्वपूर्ण और गंभीर विषय हैं जिनका महत्व न केवल भारत के लिए है , बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए भी है। इन संबंधों का समझना और उनका समीक्षण करना हमारे राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक दृष्टि के प्रति हमारी सजगता और नैतिक जवाबदेही की दिशा में महत्वपूर्ण है।भारत के पड़ोसी देश , भारत के लिए अवसरों का एक स्रोत और चुनौतियों का सामना करने का माध्यम हैं। यहां तक कि इन संबंधों की गहरी जानकारी और सहयोग न केवल राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भी भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में निर्णायक है।भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध अच्छे और स्थिर रहने के लिए, हमें अपने संबंधों को मजबूत बनाने की आवश्यकता है और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। इसके लिए , हमें सामर्थ्य और समर्थन के साथ अपने पड़ोसी देशों के साथ मिलकर काम करना होगा।नागरिकों और सरकारी अधिकारियों के सहयोग के साथ , हम भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध और सुरक्षा को स्थिर और सुरक्षित बना सकते हैं , जिससे कि भारत का राष्ट्रीय सुरक्षा संकटों का सामना करने के लिए तैयार और मजबूत रहे और इसके साथ ही हम सभी देशों के लिए एक सुरक्षित , सुखमय और सहयोगपूर्ण भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

संदर्भ

- मिश्रा, आर. (2019). क्षेत्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य. सीएससीएप क्षेत्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण, जिसे रॉन ह्यूसकेन ने संपादित किया, 21-23.
- सुबेदी, एस. पी. (1994). भारत-नेपाल सुरक्षा संबंध और 1950 संधि: नई दृष्टिकोण का समय। एशियन सर्वेक्षण, 34(3), 273-284.
- अमाडोर III, जे. एस., बोबिल्लो, ए., &पेनालबर, ए. (2011). एसियान–भारत संबंधों में मुद्दे और चुनौतियाँ: राजनीतिक-सुरक्षा पहलू. इंडिया क्वार्टरली, 67(2), 111-127.
- दत्त, वी. पी. (2009). भारत की विदेश नीति एक बदलते दुनिया में। विकास पब्लिशिंग हाउस।

- बेहुरिया, ए. के., पट्टनायक, एस. स., &गुप्ता, ए. (2012). क्या भारत के पास पड़ोसी नीति है ?. स्ट्रैटेजिक विश्लेषण, 36(2), 229-246.
- मलिक, जे. एम. (2001). चीन के विदेश संबंधों में दक्षिण एशिया। पासिफिका रिव्यू: शांति , सुरक्षा और वैश्विक परिवर्तन, 13(1), 73-90.
- होलस्लाग, जे. (2009). चीन और भारत के बीच संचिप्त सैन्य सुरक्षा दुर्भाग्य का दृढ़ संरक्षण. युद्ध अध्ययन पत्रिका, 32(6), 811-840.
- रॉय, एम. एस. (2001). केंद्रीय एशिया में भारत के रुचि. स्ट्रैटेजिक विश्लेषण , 24(12), 2273-2289.
- शुक्ला, डी. (2006). भारत-नेपाल संबंध: समस्याएँ और संभावनाएँ. भारतीय राजनीतिक विज्ञान जर्नल, 355-374.
- मुखर्जी, आर., &मैलोन, डी. एम. (2011). भारतीय विदेश नीति और समकालिक सुरक्षा चुनौतियाँ. इंटरनेशनल अफेयर्स, 87(1), 87-104.
- कुमार, एस. (संपादक). (2016). भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा: वार्षिक समीक्षा 2015–16.